प्रातःक्लास 17.3.68 ओमशांति " शिवबाबा याद है?"

ओमशांति। एक ही बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चों को समझाते हैं वा पढ़ाते हैं। बाकी मनुष्य जो कुछ पढ़ते हैं ,सुनते हैं वह तुमको पढ़ना–सुनना कुछ भी नहीं है ;क्योंकि यह तो समझ गए हो यह एक ही ईश्वरीय पढ़ाई है। बाकी सभी है आसुरी पढ़ाई। आसुरी पढ़ाई अथाह है। कितनी किताब है, कितने नाम, लिस्टे आदि पड़ते हैं। वह कोई भी तुम्हारे काम के नहीं हैं। तुमको तो सिर्फ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ावे, सिखावे ओरली पढ़ना है। वह तो अनेक प्रकार के किताब आदि लिखते हैं जो सारी दुनियां पढ़ती है। कितने ढेर किताब छपते हैं। सिर्फ तुम बच्चे ही कहते हो सिर्फ एक से ही सुनूं, सो फिर औरों समझावें ;क्योंकि उनसे जो कुछ सुनेंगे उसमें ही कल्याण है। बाकी तो ढेर के ढेर किताब हैं। नये2 निकलते ही रहते हैं। तुम समझते हो यह जो कुछ लिखते हैं सभी अनराइटियस। राइटियस सिर्फ एक बाप ही है। उनसे ही सुनना है। बाप तुम बच्चों को समझाते बहुत थोड़ा हैं। इसको फिर डिटेल में समझाकर फिर एसक ही बात आ जाते हैं। भल मन्मनाभव अक्षर बाबा रिपीट करते हैं ;पंरतु बाबा ने ऐसे कहा नहीं है। बाप तो कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो और सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का जो ज्ञान सुनाता हूं वह धारण करो। यह भी तुम जानते हो जो देवता बनते हैं वही फिर वृद्धि को पाते रहेंगें। बच्चों को मूलवतन की भी याद है। फिर नई दुनियां की भी याद है। ऊँच ते ऊँच बाप फिर यह नई दुनियां। जिनमें ऊँच ते ऊँच यह ल0ना0 राज्य करने वाले हैं। चित्र तो जरूर चाहिए ना। तो वह बाकी निशानी रह गई है। यह ही एक चित्र है। राम–सीता का भी भल है ;परंतु उनको हैविन नहीं कहेंगे। वह है सेमी। अभी उंच ते उंच बाप तुमको पढ़ा रहे हैं। इसमें किताब आदि की कोई दरकार नहीं। यह किताब आदि कुछ भी चलने का न है। जो दूसरे जन्म में पढ़ सकें। यह ...पढ़ाई ऐसी है जो इस जन्म के लिए ही है। यह अमरकथा भी है। नर से नारायण बनने की शिक्षा बाप ही देते हैं नई दुनियां के लिए। बच्चे 84 के चक्र को तो जान चुके हैं। यह पढ़ाई का समय है। बुद्धि में मंथन होना चाहिए। तुमको फिर औरों को भी पढ़ाना है। सबेरे उठकर विचार–सागर–मंथन करना है। रात को नहीं। जो समझाने वाले हैं उन्हों का ही विचार–सागर–मंथन होता रहेगा। विचार–सागर–मंथर से टॉपिक्स ,प्वाइंट्स आदि निकलती हैं। भक्ति मार्ग की बातें तो जन्म जन्मांतर सुनी हैं। यह कोइ जन्म जन्मांतर नहीं सुनेंगे। यह बात तो एक ही बार सुनाते हैं। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आकर समझाता हूं। यह नालेज फिर तुमको भी भूल जाती है। भक्तिमार्ग में कितने शास्त्र हैं। विलायत से भी बहुत किताब आते हैं। यह सभी खतम हो जाने वाला है। शास्त्रों आदि का नाम–निशान न रहेगा। यह सभी हैं कलियुगी सामग्री। यहां तुम जो कुछ देखते हो हास्पीटलें जेलें ,जज–मजिस्ट्रेट आदि वहां कुछ भी होते नहीं। वह दुनियां ही दूसरी है। दुनियां है ही एक ....नई और पुरानी दुनियां में फर्क तो जरूर होगा ना। उनको कहा जाता है स्वर्ग। वही दुनियां फिर नर्क बनती है। मुख से कहते भी हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ। सन्यासी कहेंगे ब्रह्म में लीन हो गया या निर्वाणधाम चला गया ;परंतु निर्वाणधाम में कोई जा नहीं सकते। कोई जानते ही नहीं। यह भी तुम जानते हो। रुद्रमाला कैसे बनी हुई है। यह भी जानते हो रुण्ड माला भी है। विष्णु की राजधानी की माला बनती है ना। अभी माला के राज़ को तुम जान गए हो। रुद्रमाला किसका नाम है, रुण्डमाला किसका नाम है। नम्बरवार ही इस ईश्वरीय पढ़ाई के अनुसार ही माला पिरोये जाते हैं। पहले2 तो यह निश्चय होता है ईश्वरीय पढ़ाई है। वह सुप्रीम बाप भी है ,सुप्रीम शिक्षक भी है। रचना के आदि ,मध्य,अंत का नालेज जो बुद्धि में है वही फिर दूसरों को भी देनी है। आप समान बनाना है। बच्चों को विचार–सागर–मंथन भी करना पड़े। टॉपिक्स तो बाबा बताते रहते हैं। जिससे मनुष्यों की बुद्धि में कुछ बैठे। कोई की बुद्धि में बैठता है। जैसे बाबा ने प्रश्नावली बनाई है। बाबा का खयालात चलता रहता है। जब तक छपा न है विचार–सागर–मंथन चलता ही रहता है सवेरे को। अखबारें भी सवेरे निकलती हैं। वह तो है कामन बात। यह तो विचार–सागर–मंथन करना

होता है। एकैक प्वाइंट् लाखों रुपयों का है। कोई अच्छी रीत समझते हैं। कोई कम समझते हैं। समझने और स(म)झाने के अनुसार फिर नई दुनियां में पद मिलता है। इसमें विचार–सागर–मंथन करने लिए बड़ी एकंत चाहिए। रामतीर्थ के लिए बताते हैं वह जब लिखता था तो चेले को भी कहा दो माइल दूर चले जाओ। नहीं तो तुम्हारा वायब्रेशन आ जावेगा। डिफेक्टेढ बुद्धि को दूर रहना चाहिए। अभी तुम परफेक्टेड बुद्धि बन रहे हो। सारी दुनियां ही है डिफेक्टेड बुद्धि। तुम इस पढ़ाई से दूसरे जन्म में फिर यह (ल0ना0) बनते हो। कितनी ऊँच पढ़ाई है ;परंतु नम्बरवार बिठाय नहीं सकते। पिछाड़ी को बिठाने से फंक हो जावेंगे। और ही घुटका खाते2 वायमंडल को ही खराब कर देंगे। यूं तो ला कहती है नम्बरवार बिठाना चाहिए ;परंतु इन सभी बातों को तो गुर जाने गुर की गोथरी जाने। यह है बहुत ऊँच नालेज। तुम्हारी अलग क्लास तो कर नहीं सकते हैं। वास्तव में बाबा ने समझाया था तुमको बैठना भी ऐसा चाहिए जो अंग अंग से न मिले। माइक आदि पर तो कितना दूर बैठ आवाज आदि सुन सकते हैं। बड़े2 सभाओं में 20/30हजार लोग भी बैठ सुनते हैं। यह तो एक ही बाप की पढ़ाई है। बाप कहते हैं इस दुनियां में और कुछ न सुनो। न पढ़ो। तुम उन्हों का संग भी न करो। मेहतरों से मनुष्य कितना किनारा करते हैं ना। बाप ने समझाया है यह सभी मनुष्य मेहतर से भी बदतर हैं। भार खाने वाले हैं। इनसे तुमको किनारा करना है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बहुत ऐसे भी हैं जो योग और नालेज को इतना समझते नहीं हैं। सिर्फ भार नहीं खाते। कब2 तो भार खाने वाले भी आ जाते हैं। जिनको अजामिल कहो, जो कुछ कहो। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं संग भी उनका करना चाहिए। सुनना भी उनसे चाहिए। फिर ऐसे तो सभी कहेंगे हमको फर्स्ट ग्रेड ब्राहमणी चाहिए। सेकेंड ग्रेड ,थर्ड ग्रेड तो हमको भी सेकेंड, थर्ड ग्रेड भी बना देंगी। इसलिए यह भी बता नहीं सकते हैं। फर्स्ट क्लास इतने सभी कहां से आवेंगे? जैसे म्युजियम है, वहां तो बहुत तीखे समझो। योगयुक्त समझाने वाला चाहिए। यह भी बाप समझाते हैं ड्रामा बना हुआ है। कब2 बाबा कहते हैं ड्रामा में चेंज आ जावे ;परंतु चेंज हो नहीं सकती। यह तो बनाया हुआ खेल है ना। बच्चों की अवस्थाओं को देखे खयाल आता है। यह तो कुछ चेंज हो जाये। क्या ऐसे ही स्वर्ग में चलेंगे? फिर समझता हूं स्वर्ग में तो राजधानी भी है ना। कोई दास–दासियों ,कोई चाण्डाल आदि भी तो होंगे ना। तो ड्रामा तो कुछ भी चेंज हो नहीं सकता है। भगवानुवाच यह ड्रामा बना हुआ है। उनको कुछ भी मैं चेंज नहीं कर सकता हूं। भगवान के ऊपर तो कोई है भी नहीं। मनुष्य कहते हैं भगवान क्या नहीं कर सकता? परंतु भगवान खुद कहते हैं मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूं। यह तो बना बनाया खेल है। भगवान कहेंगे ड्रामा में नूंध है। मैं क्या कर सकता हूं? बहुत पुकारते हैं हे भगवान मुझे नंगन करते हैं ,नंगन होने से बचाओ। अभी बाप क्या करेंगे? बाप सिर्फ कह देते ड्रामा की भावी। भक्तिमार्ग में मनुष्य समझते हैं ईश्वर की भावी और ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। यह तो बना बनाया ड्रामा है ना। ऐसे मत समझो भगवन की भावी। भगवान के हाथ में होता तो समझो कोई अनन्य शरीर छोड़ देते हैं, उनको भी बचा लेते। ऐसे बहुतों को संशय आते हैं। भगवान पढ़ाते हैं ,भगवान के बच्चे हैं। भगवान भी बच्चों को बचा नहीं सकते हैं। बहुत डोरापा देते हैं। कहते हैं ऐसे2 साधु लोग तो किसको प्राणों को बचा लेते हैं। प्राण फिर से आ जाते हैं। ऐसे तो होता है चिक्षा से भी उठ आते हैं। फिर कहेंगे ईश्वर ने लौटा लिया। काल ले गया, उस पर प्रभु ने रहम किया। भल समझाते हैं ड्रामा में जो नूंध है वही होता है। कोई कुछ कर नहीं सकता। मम्मा सरस्वती कितनी अच्छी थी। साक्षात् लक्ष्मी बनने वाली ,उनको भी दुःख से बचा न सके। बाप कुछ भी कर नहीं सकते। इसको कहा जाता है ड्रामा की भावी। ड्रामा का अक्षर तुम ही जानते हो। जो होना था ,सो हुआ। फिक्र काहे का। तुमको भी बेफिक्र बनाते हैं। सेकेंड व सेकेंड जो कुछ होता है ड्रामा समझो। शरीर छोड़ कर जाय दूसरा पार्ट बजाया। अनादि पार्ट को तुम केसे फेर सकते हो। भल अभी थोड़ी कच्ची अवस्था है। थोड़ा बहुत

आता है। बाबा मिसाल देते हैं मम्मा की। उनको जाने का नहीं था। कहते थे पिछाड़ी में वह रहेगी। यह बूढ़ा चला जावेगा ; मम्मा चली गई। भावी। कुछ कर नहीं सकतें और लोग भल क्या2 भी कहे ;परंतु हमारे बुद्धि में ड्रामा का राज है। चक्र का भी मालूम है। पार्ट बजाना है। फिक्र की बात नहीं। जब तब कच्ची अवस्था है लहर थोड़ी आवेगी। बाबा कहते हैं यह भी कच्चा है। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम सभी पढ़ रहे हो। सभी देहधारी हैं। एक मैं ही विदेही हूँ। देहधारियों को बतलाता हूँ यह भी बच्चा है। बाप बैठ समझाते हैं। कोई समय फिर यह भी बेहद में बैठ जाते हैं। बेहद में देखते हैं ना। बाप को याद करने बदली तुम बच्चों को बेहद में देखते हैं। मुझे बाप को याद करना है यह भूल जाता हूं। यह बाप का पार्ट और प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट बड़ा ही वंडरफुल पार्ट है। कोई समय खुद ही सुनाता हूं। ऐसा करते2 सदैव बाबा न रहे मैं ही रह जाऊँ। मैं ही सुनाता हूं। यह हो जावेगा तो पक्की याद हो जावेगी। जिसको ज्ञान मिला तो बाप के समान होशियार हो गया। वह अवस्था हो जावेगी तो वह फुल पास, कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। फिर लड़ाई लग जावेगी। बाप महसूस करते हैं क्या अवस्था होगी। बाप को याद करते2 बाप बन गया। बाबा चला जावेगा। फिर खेल खलास। यह बाप विचार–सागर–मंथन करते हैं। बच्चों को सुनाते भी रहते हैं। कितनी वंडरफुल नालेज है। कितनी बुद्धि चलानी पड़ती है। बाबा का सुबह को विचार–सागर–मंथन होता है। समय तो बहुत है। अजन तो जैसे रेगड़ियां पहनते रहते हैं। ऐसा बनना चाहिए जैसा हूबहू टीचर। फिर भी फर्क जरूर रहता है। टीचर स्टुडेंट को कब 100मार्क्स नहीं देंगे। कुछ जरूर कम देंगे। वह है ही ऊँच ते ऊँच। हम तो सभी देहधारी हैं। तो हम बाप मिसल 100परसेंट थोड़े ही बन सकते हैं। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। कोई2 तो सुनकर धारण करते हैं। खुश होते हैं। बहुत कहते हैं बाबा की तो एक ही वाणी है। कोई नई बात तो है नहीं। वही रिपीटेशन है। अभी कोई नये को ले आते हैं तो मुझे पहली प्वाइंट भी लेनी पड़ती है। फिर कोई नई प्वाइंट्स भी निकल पड़ती है। मनुष्य तो ढेर हैं। औरों को समझाने लिए बच्चों को फिर भी बाप को मदद करनी पड़ती है। मैगजीन निकालते हैं, कल्प पहले भी ऐसे ही लिखते होंगे। अगर अखबार निकालें उन पर तो फिर बहुत अटेंशन देना पड़े। ऐसी कोई बात न हो जो मनुष्य पढ़कर नाराज़ हो जाये। मैगजीन तो तुम पढ़ते हो। कोई कच्ची–पक्की बात होगी कहेंगे अभी सम्पूर्ण थोड़े ही बने हैं। एक्युरेट 16का सम्पूर्ण बनने में टाइम लगता है। अभी तो बहुत काम चाहिए। बहुत सर्विस करनी है। बहुत2 प्रजा बनानी है। यह भी बाप ने समझाया है अनेक प्रकार के मार्क्स हैं। कोई निमित्त बनते हैं बहुतों को ज्ञान लेने लिए प्रबंध करते हैं तो उनको भी मिलता है। अभी तो पुरानी दुनियां ही खतम होनी है। यहां है अल्पकाल का सुख। बीमारी आदि तो सभी को होती है। साधु लोग भी कोई2 तो जैसे मैडचैप होते हैं। भक्त लोग समझते हैं सातवीं भूमिका है। यह विदेही है। बाबा तो इन बातों में अनुभवी है ना। दुनियां की बातें भी समझाते रहते हैं। बाबा ने कहा था मैगजीन वा अखबार में वंडरफुल बातें लिखो। जैसे अभी इन्दिरा गांधी के बच्चे की शादी हुई तो तुम लिखो यह कोई नई बात नहीं। 5000वर्ष पहले भी उनकी शादी इसी लड़की के साथ हुई थी। शास्त्री मरा, 5000वर्ष पहले भी मरा था। तो मनुष्य वंडर खावेंगे और तुमसे पूछेंगे यह कैसे लिखा तुमने? परंतु ऐसा कोई समाचार आता नहीं है। यह बहुत ही वंडरफुल बात है। जब कोई बड़ी बात हो तो लिखना चाहिए जो समझे ब्र.कु. ने यह बात तो बिल्कुल ठीक लिखी है। यह लड़ाई भी 5000वर्ष पहले ऐसे ही हूबहू लगी थी। कैसे सो आओ तो हम क्लीयर समझावें। तो तुम्हारा नाम भी होगा। मनुष्य बहुत खुश हो जावेंगे। बहुत बड़ी बात है ;परंतु जब किसकी बुद्धि में बैठे। पढ़े–लिखे ऑफिसर्स लोग की बुद्धि में तो भूसा भरा रहता है। वह मुश्किल समझेंगे। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।